उपनिषदों का परिचय

डॉ0 कुमारी श्वेता*

उपनिषद् हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ है। ये वैदिक वाड्मय के अभिन्न अंग है। वैदिकय वाड्मय का अन्तिम भाग होने के कारण उपनिषदों को बेदान्त भी कहते है। इसमें परमेश्वर, परमात्मा–ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव अथवा संबंध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक वर्णन किया गया है।

संस्कृत साहित्य में उपनिषद ग्रन्थों का स्थान बहुत ऊँचा है। यहाँ तक कि वेदों के शिरोभाग के नाम से उपनिषदों का परिचय दिया गया है, और अध्यात्म ज्ञान के लिए उपरनिषद ग्रन्थ ही एकमात्र साधन है। वेदान्तसूत्र और श्रीमद् भागवद् गीता आदि समस्त गीतायें उपनिषदों के ही ज्ञानरत्नों से परिपूर्ण है।
उपनिषद् शब्द की निष्पति व अर्थ–उप+नि+षदलृ (सद)+विनप्–उपनिषद् उप का अर्थ है समीप और नि का अर्थ है–निश्चयपूर्वक या निष्ठापूर्वक और षद्लृ का अर्थ है–बैठना

इस प्रकार उपनिषद का अर्थ है गुरू के पास बैठकर विनम्रता पूर्वक ज्ञान की प्राप्ति करना।
आचार्य शंकराचार्य जी ने षदलु धातु के तीन अर्थ बताए है–
1.विशरण **2.**गति **3.**अवसादन।
विशरण का अर्थ होता है – नाश होना, (अविधा का नाश होना)
गति का अर्थ होता है – पाना या जानना। (ब्रह्मा को पाना या जानना)।

ऋग्वेद के दूसरे मण्डल में इन्द्र देवता की स्तुति में सर्वाधिक 250 सूत्र है। इन्द्र को वर्षा को देवता भी कहा गया है। इसके बाद अग्नि (200 सूत्र) तथा वरूण (30 बार) का उल्लेख है।

गृहस्थ आर्यों द्वारा किये जाने वाले पाँच महायज्ञ निम्नलिखित हैं।

1. ब्रह्मयज्ञ– अध्ययन–अध्यापन द्वारा ब्रह्म के प्रति कृतज्ञता।
2. देवयज्ञ– हवन द्वारा देवताओं की पूजा अर्चना।
3. पितष्यज्ञ– पितरों को जल व भोजन द्वारा तर्पण।
4. मनुष्य यज्ञ– अतिथी सत्कार द्वारा।
5. भूत यज्ञ– समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता।

धार्मिक जीवन– उत्तर वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठानों व कर्मकाण्डों में वृद्धि हुई। यज्ञ में अधिक पुरोहितों की आवश्यकता होने लगी। ऋग्वैदिक देवता इन्द्र

***पी.एच.डी., संस्कृत मगध विश्वविद्यालय, बोधगया**

व अग्नि का महत्व कम हो गया तथा प्रजापति (ब्रह्म) को सृष्टि निर्माता के रूप में सर्वोच्च स्थान मिला।

- पशुओं के देवता रूद्र उत्तर वैदिक काल में शिव के रूप में प्रतिष्ठत हुए। विष्णु भी सृष्टि के संरक्षक के रूप में पूजे जाने लगे।
- उपनिषदों में ब्रह्म को ही एकमात्र परम् सता के रूप में स्वीकार किया गया।
- हान्दोग्योपनिषद् में धर्म के तीन स्कन्ध–यज्ञ–अध्ययन और दान बतलाया गया है।
- विविध महत्वपूर्ण तथ्य–ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम चारों वर्णों के कर्तव्यों का उल्लेख मिलता है।
- हान्दोग्य उपनिषद् में इतिहास पुराण को पंचम वेद कहा गया है।

अब क्रम से इनकी जानकारी प्राप्त करते है।

1. ईशावास्योपनिषद् इस उपनिषद् के प्रथम मन्त्र से इसका नामकरण हुआ है–

''ईशा वास्यमिदँ सर्व यात्किश जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुसीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।''

यह शुतलयजुर्वेद रोहता (कान्व तथा वाजसेनयी) के चालीसवें अध्याय के रूप में है। अतएव यह अत्यन्त प्राचीन उपनिषद है। इसमें केवल अठारह अध्यात्मक मन्त्र है। संक्षेप पूर्वक उपनिषदों के सभी विषयों का अति प्रभावशाली निरूपण हुआ है। इस उपनिषद में आत्मा का आर्दश ऋषि का परवर्ती कर्मयोग का दिग्दर्शन कर्म तथा ज्ञान का समुचित समन्वय का वर्णन किया गया है। कर्म तथा ज्ञान का समुचित समन्वय इस उपनिषद् की सर्वाधिक मूल्यवान कल्पना है, जो इसके मूल में है।

शंकराचार्य जी ईशालास्योपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय आत्मैकत्व विज्ञान मानते है।

2. केनोपनिषद्– यह सामवेद की जैमिनयि शाखा से संबंध है, इसे तलवकार या जैमिनयि शाखा से संबंध है, तलवकार या जैमिनीय उपनिषद् भी कहते है। केनेषितं पतति प्रषितं मनः इत्यादि प्रथम मंत्र के प्रथम पद के आधार पर इसका नाम पड़ा है। यह अत्यंत लघुकाय उपनिषद् है 4 खण्डो में विभक्त है जिसमें कुल मन्त्र 34 है। दो खण्ड गद्यात्मक है।

3. कठोपनिषद् –यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कंठ शाखा के अन्तर्गत आता है। इसमें दो अध्याय है जो तीन तीन वल्लियों में विभक्त है।

इसका आरंभ नचिकेता की कथा से होता है इसमें भेय और प्रेय का सुंदर चित्रण है।

असतो मा सद्गमय – ऋग्वेद से लिया गया है।
ऋग्वेद में अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है।

सामाजिक जीवन–उत्तर वैदिक काल में सर्वप्रथम हान्दोय उपनिशद् में तीन आश्रमों की जानकारी मिलती है। चौथे आश्रमों की स्थापना अभी तक नहीं हुई थी (संन्यास आश्रम)।

ये तीन आश्रम 1. ब्रह्मचार्य 2.वानप्रस्थ 3.गृहस्थ थे। सर्वप्रथम जाबलोपनिषद् में चारों आश्रमों के उल्लेख मिलते है।

उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। उन्हे पैतृक संपत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया एवं सभा में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित कर दिया गया।

हान्दोग्य उपनिषद् में दासो को संपत्ति माना गया। ऋगवैदिक समाज (काल) में बाल विवाह, व सती प्रथा प्रचलित नहीं थे। पुर्नविवाह व नियोग प्रथा प्रचलित थी। पर्दा–प्रथा का उल्लेख नहीं है।

- आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्याओं को अमाजू कहा जाता था।
- कन्या के विदाई के समय जो उपहार दिये जाते थे, उसे बहतु कहते थे।
- ऋग्वैदिक काल में पुत्री का उपनयन संस्कार होता था।
- शिक्षा – स्त्रियाँ भी वैदिक शिक्षा प्राप्त करती थी व उन्हे यज्ञ करने का अधिकार भी था। लोपामुद्रा विदर्भ राजा की पुत्री व अगस्तय ऋषि की पत्नी थी।
- शिक्षा गुरूकुल में दी जाती थी, व मौखिक होती थी।

आर्य समाज– यह पितृसत्तात्मक समाज था। पिता की संपत्ति का पुत्र ही उत्तराधिकारी होता था।

- नारी को भी माता के रूप में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था।
- धार्मिक अनुष्ठान में भी पत्नी अनिवार्य रूप से भाग लेती थी।
- संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी, ऋग्वेद के अन्तिम काल में वर्ण व्यवस्था के चिन्ह दृष्टिगोचर होते है।
- ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरूष सुत्र में विराट पुरूष द्वारा चारों वर्णों की उत्त्पत्ति का वर्णन मिलता है।

वैश्य तथा शुद्र का ऋग्वेद में केवल एक ही बार उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में वर्ण – व्यवस्था जन्म पर आधारित थी। ऋग्वैदिक काल में दास के बारे में कहा गया है कि वे न तो अग्नि में छविदान करते थे और न ही इंद्र व हवा के पक्षपाती थे।

- आर्य विशेष अवसरो पर माँस तथा मदिरा (सोमरस) का भी प्रयोग करते थे।
- आर्य तीन प्रकार के वस्त्र पहनते थे – अद्योवस्त्र, उतरीय, अधिवास। सिर पर उष्णीय (पगड़ी) धारण करते थे।

- वैदिक काल में सैन्धव सभ्यता के पतन के पश्चात भारत में जिस सभ्यता के लोगों का उत्थान हुआ वे आर्य कहलाते है।
- आर्यो के मूल स्थान को लेकर इतिहासकारों के मध्य गहरा विवाद/मतभेद है।
- लेकिन वर्तमान समय में मैक्समूलर द्वारा कही गई कि आर्य मध्य एशिया के निवासी थे।

आर्थिक स्थिति– उस समय आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन वाणिज्य व्यापार और उद्योग–धन्धों पर आश्रित था।

''शुनं नः फाला विकष्षन्तुभूमि
शुनं कीनाशा अभियन्तु बाहैः।'' (ऋग्वेद)

कृषि के योग्य भूमि को खेतों में परिवर्तित किया जाता था। खेती करने वालों को ऋग्वेद में किनाशा कहते थे। ये लोग हलों से भूमी की जुताई करते थे।

इस प्रकार ऋग्वेद के युग में समाज का वैविध्यपूर्ण चित्र प्राप्त होता है। भारतीय इतिहास में साहित्यिक सामग्री के आधार पर सर्वाधिक स्पष्ट चित्र हमें पहली बार ऋग्वेद में ही मिलता है। यह वस्तुतः हमारे देश का ग्रन्थरत्न है।

****